PART - III
PAPER - VI
(1)

# Mandal System of Kautilya

Q. कौटिल्य का मंडल सिद्धान्त क्या है?

उत्तर :— अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने मंडल सिद्धान्त का विशद् वर्णन किया है। एक राज्य का अपने पड़ोसी राज्य के साथ के संबंध का विश्लेषण मंडल सिद्धान्त के अन्तर्गत किया गया है तथा विदेशी राज्य के संबंध को षाड्गुण्य नीति के अन्तर्गत किया है। नीति तथा स्मृतिग्रन्थ मंडल सिद्धान्त का आधार है। वास्तव में जिस मंडल सिद्धान्त की विवेचना अर्थशास्त्र में की गई है उसका वर्णन रामराज्य में दिग्विजय सिद्धान्त के अन्तर्गत ही किया गया था।

Mandal का साब्दिक अर्थ होता है — "राज्यों का वृत"। इस सिद्धान्त में मंडल केन्द्र ऐसा राजा होता है जो अपने निकटस्थ राज्यों को अपने राज्य में सम्मिलित करने का आकांक्षी होता है। कौटिल्य ने ऐसे राजा को विजय की इच्छा रखने वाला विजिगीषु राजा कहा है। एक राजा का पड़ोसी राज्य नितान्त स्वाभाविक रूप से उसका शत्रु राज्य होता है। विजिगीषु राजा के राज्य की सीमा से लगा हुआ जो भी राज्य होगा, वह अरि राज्य होगा। विजिगीषु के राज्य से अलग किन्तु उसके पड़ोसी राज्य से मिला हुआ राज्य विजिगीषु का मित्र होता है और मित्र राज्य से मिला हुआ राज्य अरि मित्र

Scanned with CamScanner

राज्य होता है। अर्थात् अपने निकटतम् शत्रु पड़ोसी राज्य का राजा शत्रु उसके आगे का मित्र और उससे आगे का अरि - मित्र-मित्र यही क्रम सिलसिलेवार ढंग से चलता है। यह सिद्धान्त क एक राजा को विजय की आकांक्षा रखने वाला समझ कर उसके चारों ओर मंडल की संरचना करता है। मंडल सिद्धान्त बार राज्यों के वृत पर आधारित है इसका केन्द्र एक ऐसा राजा होता है जो अपने पड़ोसी राज्य को अपने राज्य में मिलाने का आकांक्षी होता है ऐसे राज्य के राजा को ही विजीगीषु कहा जाता है। ~~बाल~~ बालिमकी और तुलसी रामायण में अश्व-मेध यज्ञ के द्वारा चक्रवर्ती राजा की योजना पूरा होने की जो आकांक्षा निर्धारित की गई है, वही ध्येय मंडल सिद्धान्त का भी है। मंडल में कुल बारह प्रकार के राज्य होते हैं यथा — विजिगीषु, अरि, मित्र, अरि - मित्र, मित्र-मित्र, अरि - मित्र - मित्र, पार्ष्णिग्रह, आक्रन्द, पार्ष्णिग्राहसार, आक्रन्दसार, मध्यम तथा उदासीन। भौगोलिक दृष्टि से विजीगीषु मंडल के बीच में रहता है। अरि, मित्र, अरि - मित्र, मित्र - मित्र, अरि - मित्र - मित्र, ये पाँच राज्य विजिगीषु के सामने तथा पार्ष्णिग्राह, आक्रन्द तथा पार्ष्णिग्राहसार और आक्रन्द सार उसके पीछे रहते

Scanned with CamScanner

है। शेष दो राज्य माध्यम और उदासीन कहीं भी रह सकते हैं। मंडल सिद्धान्त की विवेचना करने के लिए यह ग्राफ बनाना आवश्यक है। जो निम्नलिखित हैं:—

विजिगीषु
अरि (दुश्मन)
मित्र
अरि-मित्र

विजय का आकांक्षी राजा

1. विजिगीषु
2. अरि (दुश्मन)
3. मित्र
4. अरि - मित्र
5. मित्र - मित्र
6. अरि - मित्र - मित्र
7. पार्ष्णि ग्राह (पीठ का शत्रु)
8. आक्रन्द (पीठ का मित्र)
9. पार्ष्णिग्राहासार (पीठ के शत्रु का मित्र)
10. आक्रन्द सार (आक्रन्द का मित्र)
11. मध्यम
12. उदासिन

मंडल के मध्य में विजय का आकांक्षी विजिगीषु राजा रहता है। विजिगीषु के सामने और लगा हुआ राज्य उसका शत्रु है अतः वह अरि राज्य कहलाता है। अरि के सामने मित्र राज्य है जो विजिगीषु का मित्र तथा अरि का शत्रु होता है। मित्र के सामने वाला राज्य अरिमित्र कहलाता है क्योंकि वह अरि का मित्र है तथा विजिगीषु का शत्रु है। अरि - मित्र के सामने वाला राज्य मित्र-मित्र कहलाता है चूंकि वह मित्र राज्य का मित्र होता है अतः विजिगीषु के साथ भी

उसकी मित्रता होती है। मित्र - मित्र के आगे का राज्य अरि - मित्र - मित्र कहलाता है वह शत्रु मित्र का मित्र होता है अतः शत्रु राज्य के साथ उसके संबंध मधुर तथा विजिगीषु के साथ उसके संबंध कटु होते होते हैं। विजिगीषु के पीछे जो राज्य रहता है वह पार्ष्णिग्राह कहलाता है तथा अरि राज्य की तरह ही वह विजिगीषु का शत्रु होता है। उसके पीछे विजिगीषु का मित्र राज्य आक्रन्द होता है। आक्रन्द के पीछे वाला राज्य आक्रन्द का शत्रु तथा पार्ष्णिग्राह का मित्र पार्ष्णिग्राहसार होता है उसके पीछे का राज्य आक्रन्द का मित्र होता है अतः वह आक्रन्दसार होता है। मध्यम राज्य का प्रदेश विजिगीषु तथा परिराज्य (शत्रु तथा मित्र दोनों) दोनों के ही सीमा से लगा हुआ होता है। दोनों से अधिक शक्तिशाली होने के कारण वह उनकी सहायता भी करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर वह उनका मुकाबला भी करता है। विजिगीषु, अरि तथा माध्यम - इन तीनों की सीमाओं से बिल्कुल पृथक उदासीन राजा रहता है। अधिक शक्तिशाली होने के कारण वह उनकी सहायता भी कर सकता है एंव मुकाबला भी कर सकता है।

मण्डल का विश्लेषण यद्यपि सामान्तर रेखा में अवस्थित राज्यों के रूप में की जा सकती है तथापि इसका अध्ययन वृत्ताकार परिधि क्षेत्र की ओर संकेत देता है।

Scanned with CamScanner

मण्डल सिद्धान्त के अन्तर्गत राज्यों के जो विभिन्न नाम तथा सम्बंध बताये गए हैं वे परिस्थिति तथा कालानुसार बदल भी सकते हैं। परिवर्तित स्थिति के कारण विजिगीषु, अरि तथा मित्र का रूप बदल सकता है। बारह राज्यों का होना मण्डल सिद्धान्त के लिए अतिआवश्यक भी नहीं है क्योंकि उनमें काल तथा स्थिति के अनुसार परिवर्तन हो सकते हैं। मण्डल के सभी राज्यों की शक्ति प्रायः एक समान होती है परन्तु निः सन्देह ही उदासीन तथा मध्यम राज्यों की स्थिति भिन्न होती है। अतः मण्डल समान शक्ति वाले राज्यों का एक ऐसा समूह है जो दो विरोधी गुटों में विभक्त रहता है। दुर्बल राज्यों को अपने शक्तिशाली पड़ोसी राज्यों से सतर्क रहने तथा उनकी विस्तार नीति से अपनी रक्षा के लिए ही मंडल निर्माण की सलाह कौटिल्य ने अर्थशास्त्र के अन्तर्गत दी है। वास्तव में इस सिद्धान्त का आधार शक्ति संतुलन है चूँकि युद्धों को पूर्ण तथा समाप्त नहीं किया जा सकता है अतः उसके खतरे को कम करने के लिए एक ऐसी नीति (मंडल सिद्धान्त) आवश्यक है जिसके अनुसार देश में विद्यमान अनेक छोटे बड़े राज्यों में शक्ति का विवेक पूर्ण संतुलन बना रह सके और युद्ध की संभावना को टाला जा सके।

भौगोलिक दृष्टि से आज

मंडल सिद्धान्त का महत्व समाप्त सा हो गया है क्योंकि आज विभिन्न इकाई के राज्यों की विखंडना के लिए नहीं बल्कि उनको एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। आज के युग में विजिगीषु राज्यों का कोई स्थान नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के युग में राज्य विस्तार नीति अथवा युद्ध नीति को किसी भी रूप में नहीं स्वीकार किया जा सकता है। आज एक राज्य का पड़ोसी राज्य के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहता है। मंडल सिद्धान्त की तरह वह उनका शत्रु नहीं होता है। आज मात्र सीमा के आधार पर ही दो देशों का संबंध स्थापित नहीं होता है बल्कि व्यापारिक तथा पारस्परिक हित उन्हें एक सूत्र में भी बाँधते हैं तथा एक दूसरे के स्तर पर संघर्ष के लिए भी प्रेरित करते हैं। लेकिन इसके बावजूद भी आज विश्व का कोई भी ऐसा देश नहीं है जिसने कूटनीतिक समझौते नहीं किए हों चाहे पूँजीवादी हो या साम्यवादी। असंलग्न नीति के समर्थक तीसरी दुनिया के देशों ने भी विकास की आड़ में शक्तिशाली देशों के साथ व्यापारिक और कूटनीतिक संबंध स्थापित किए हैं। अतः कौटिल्य का मंडल सिद्धान्त आज भी राज विज्ञानों को किसी न किसी रूप में प्रेरणा देता रहा है। मंडल सिद्धान्त कौटिल्य की विदेश नीति संबंधी, मुत्सद्दी और व्यवहारिक राजनीति में उसकी दक्षता तथा दूरदर्शिता का परिचायक है। वास्तव में मंडल सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के मूलभूत सिद्धान्तों तथा वास्तविक तथ्यों पर आधारित है।

Scanned with CamScanner

B.A. PART-III VIIIth PAPER



Q. भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की उत्पत्ति ?

उत्तर : इस देश में राष्ट्रवाद के विकास के परिणामस्वरूप राजनीतिक संगठनो की स्थापना की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई और थोड़ी ही समय मे British Indian Association, Indian league, Indian Association, Bombay Association पूना की सार्वजनिक सभा और राष्ट्रीय सम्मेलन के रूप मे अनेक राजनीतिक संघो की स्थापना हुई। 1885 में काँग्रेस की स्थापना का कार्य विचारों था संगठन की दृष्टि से आकस्मिक आकर्षित नहीं था, बल्कि इस प्रक्रिया का ही एक वृहत रूप था। अतः काँग्रेस संगठन की स्थापना की पृष्ठ भूमि के रूप में काँग्रेस के स्थापना की पृष्ठ भूमि के रूप में काँग्रेस के पूर्ववती संगठनों का रूप इस प्रकार है। जैसे :—

a) Indian Association – (भारतीय परिषद्)
b) Bombay Association (Presidency Association)
c) National league (बंगाल में)
d) Majan Sabha – (मद्रास में)
e) British Indian Association,

इसी प्रकार 1881 में मद्रास में महाजन सभा की स्थापना हुई।

ऊपर दी गई संस्थाओं के द्वारा विभिन्न प्रांतो में राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने का कार्य किया जा रहा था। 1875 के बाद लार्ड लिंटन के अविवेकपूर्ण कार्यों और लार्डरिपन के शासनकाल में इलबर्ट विधेयक संबधी विवाद ने अखिल भारतीय लक्षण के राजनीतिक संगठन की आवश्यकता स्पष्ट की। इन परिस्थितियों मे सर्वप्रथम संभवत: एक

Scanned with CamScanner

अवकाश प्राप्त अँग्रेज अधिकारी Allan Octavian ह्यूम के मस्तिष्क में काँग्रेस की स्थापना का विचार का उदय हुआ। अतः ह्यूम को ही इस संस्था का जन्म दाता माना जाता है। उन्होंने 1 March 1883 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकों के नाम एक अत्यन्त हृदय स्पर्शी पत्र लिखा। इस पत्र में उन्होंने 50 ऐसे नवयुवकों की माँग की जो सच्चे निः स्वार्थ आत्मसंयमी, नैतिक, साहस रखने वाले तथा निः स्वार्थी हो। पत्र का अन्त बड़ा ही प्रभावदायक था जिसमें उन्होंने लिखा था कि :— "आपके कंधों पर रखा हुआ जुआ तब तक मौजूद रहेगा, जब तक आप इस सत्य को समझकर उसके अनुसार कार्य करने को तैयार न होगें। इसलिए आत्मबलिदान एंव निः स्वार्थ कर्म ही स्थायी सुख तथा स्वतंत्रता के पथ - प्रदर्शक होगें।"

ह्यूम ने अपने योजना के संबंध में तत्कालीन वायसराय लार्ड डफरिन से वार्ता की। डफरीन ने उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुना और प्रस्तावित संघ के कार्य क्षेत्र को बढ़ाने का सुझाव दिया। ह्यूम ने अपनी योजना में वायसराय के निर्देशों के अनुसार परिवर्तन किया और वे इंग्लैण्ड पहुँचे। वहाँ इन्होने लार्ड रिपन, डलहौजी, ब्राइट तथा स्लेग इत्यादि से विचार विनिमय किया। भारत लौटने के — पहले उन्होने इंग्लैंड में भारतीय संसदीय समिति का गठन किया। जिसका उद्देश्य ब्रिटिश संसद के सदस्यों में

Scanned with CamScanner

भारतीय मामलों के प्रति दिलचस्पी उत्पन्न करना था।

इंग्लैंड से वापस आने पर यह निश्चित किया गया कि कॉंग्रेस का प्रथम अधिवेशन पूना मे 25 - 28 Dec 1885 तक होगा। लेकिन पूना में हैजा हो जाने के कारण अधिवेशन बम्बई में किया गया। 28 Dec 1885 को दिन के 11 बजे गोकुल दास तेजपाल संस्कृत कॉलेज महाविद्यालय के भवन में कॉंग्रेस का प्रथम अधिवेशन आरंभ हुआ। जिसकी अध्यक्षता कलकत्ता के प्रसिद्ध बैरिस्तर व्युमेश चन्द्र बैनर्जी द्वारा की गई। अधिवेशन में भारत अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति जैसे :— दादा भाई नौरोजी, सरफिरोजशाह मेहता, काशी नाथ तैलंग, बद्दरुद्दीन तैय्यबजी, D.A. वाच्चा, राघवाचार्य S. सुब्रमन्यम, नारायण गणेश चन्द्रविकर, आनंद्दा चालू इत्यादि उपस्थित थे। ये सारे कार्य सरकारी दृष्टिकोण से किए गये थे।"

कूपलैण्ड ने लिखा है कि — "भारतीय राष्ट्रीयता ब्रिटिश राज की शिशु थी" और ब्रिटिश अधिकारियों ने उसके पालने को आर्शिवाद दे दिया।"

अधिवेशन में सर विलियम वेडरबर्न और राणाडे जैसे सरकारी अधिकारी भी उपस्थित थे। उमेशचन्द्र बनर्जी ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए निम्नलिखित उद्देश्य बतलाएँ थे।

साम्राज्य के विभिन्न भागों में देशहित के लिए लगन से कार्य करनेवाले व्यक्तियों के बीच घनिष्ठता और मित्रता के संबंध स्थापित करना।

सभी देशवासियों में धर्म, वंश और प्रांत जैसी दूषित संस्कारों को मिटाकर राष्ट्रीय एकता की

Scanned with CamScanner

भावनाओं को मजबूत करना और उसे बढ़ाना।

c) महत्वपूर्ण और आवश्यक सामाजिक प्रश्नों पर भारत के शिक्षित लोगों में अच्छी तरह चर्चा होने के बाद उनसे प्राप्त सहमतियों का संग्रह करना।

d) उन तरीकों और दिशाओं का निर्णय करना जिसके द्वारा भारत के राजनितिज्ञ देश हित के कार्य करें।

<u>कॉग्रेस की स्थापना से संबंधित कुछ विवाद :—</u>

A.O ह्यूम तथा उनके सहयोगियों द्वारा कॉग्रेस को संगठित करने के उद्देश्य क्या थे? इस संबंध में विद्वानों की राय एक जैसी नही हैं। विशेषकर दो विचारधाराएँ प्रस्तुत की जाती हैं जिनमे पहली धारणा के अनुसार कॉग्रेस की स्थापना व्यापक असंतोष के कारण एक (Safty valve) एक अभयदीप के रूप में की गई थी। अर्थात कॉग्रेस का जन्म ब्रिटिश साम्राज्य के रक्षा के लिए हुआ था।

कॉग्रेस की स्थापना के संबंध में दूसरी धारणा यह थी कि — यह संगठन भारतवासियों के हित में एक राष्ट्रीय संस्था के रूप में है। अतः एनीबेसेन्ट लिखती हैं कि :— राष्ट्रीय कॉग्रेस का जन्म मातृभूमि की रक्षा के लिए 1+ प्रमुख भारतीयों तथा ह्यूम साहब के द्वारा हुआ था। जिसकी चर्चा लालाजी ने यंग इंडिय में किया था।

कॉग्रेस की स्थापना के उद्देश्य के संबंध में जो दो दृष्टिकोण ऊपर व्यक्त किए गए हैं, वे दोनों आंशिक रूप से सत्य हैं। कॉग्रेस की स्थापना की सही व्याख्या इसी रूप मे की

जा सकती है कि कॉंग्रेस की स्थापना के मूल में ब्रिटिश साम्राज्य के रक्षण की भावना तो विद्यमान थी किन्तु इसके साथ ही कॉंग्रेस की स्थापना के मूल में भारतीयों के हित का विचार और भारतीयता की भावना भी विद्यमान थी। भारतीय राजनीति में उस समय दो प्रमुख धारणाएँ थी। पहले मत के लोग हिंसा के द्वारा ब्रिटिश राज्य का अंत कर देना चाहते थे, जबकि दूसरे मत के लोग ब्रिटिश राज का अंत, कम से कम तत्काल मे अंत नहीं चाहते थे। वे भारतीय शासन मे भारतीय जनता का ऐसा प्रतिनिधित्व चाहते थे जो बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ जाय कि ब्रिटिश ताज के अंतर्गत स्वशासन प्राप्त कर ले। Mr. Hume और कॉंग्रेस की स्थापना देश को वैधानिक प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए ही की गई थी।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस एक राष्ट्रीय संगठन के रूप में निर्माण हो चुका था। इसका उद्देश्य जाति, धर्म, (वर्ण) के किसी भेद-भाव के बिना सभी भारतवासियो का प्रतिनिधित्व करना था। कॉंग्रेस का राष्ट्रीय स्वरूप इसी से स्पष्ट हो जाता है कि इसके प्रथम अध्यक्ष उमेश चन्द्र बनर्जी भारतीय ईसाई थे। दूसरे दादाभाई नौरोजी पारसी थे। तीसरे बदरुद्दीन तय्यबजी मुस्लिम थे तथा चौथे और पाँचवे क्रमशः जार्ज यूल एंव विलियम वेडरबर्न अंग्रेज थे। दूसरी गोलमेज सम्मेलन के अवसर पर गाँधी जी ने कॉंग्रेस के राष्ट्रीय स्वरूप पर अपने विचार व्यक्त किए थे। जिसमें उन्होंने कहा था कि:-

Scanned with CamScanner

कॉंग्रेस सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय है। यह किसी विशेष जाति, धर्म या हित की प्रतिनिधि नहीं है। यह समस्त भारतीय हितों और सब वर्गों के प्रतिनिधि होने का दावा करती है। मेरे लिए सबसे अधिक प्रसन्नता की बात है कि उसकी उपज प्रारंभ मे एक अंग्रेज के मस्तिष्क में हुई तथा दो महान ~~पारि~~ पारसियों नवरोजी एंव मेहता ने इसका पोषण किया। प्रारंभ में ही कॉंग्रेस के मुसलमान, ईसाई एंग्लो इंडियन आदि शामिल थे, बल्कि मुझे यह भी कहना चाहिए ~~की~~ कि इसमें सब वर्गों, धर्मों साम्प्रदायों और हितों का पूर्णतः के साथ प्रतिनिधित्व होता था।

इसमें संदेह नहीं कि कॉंग्रेस के अधिकांश सदस्य और पदाधिकारी हिन्दू थे। इसका एक कारण यह है कि भारत की अधिकांश जनता हिन्दू है। कॉंग्रेस में अनुपातिक रूप में मुसलमानों की संख्या कम होने के कारण यह भी था कि सर सय्यद अहमद जैसे प्रभावशाली व्यक्ति मुसलमान मुसलमानों को कॉंग्रेस के बाहर रखने का पूरा प्रयत्न कर रहे थे, लेकिन कॉंग्रेस ने हमेशा से ही मुसलमानों सहित सभी वर्गों के हितों की रक्षा का पूरा-पूरा प्रयत्न किया और इस प्रकार ~~अस~~ उसने राष्ट्रीय स्वरूप को बनाये रखा।

—0—

Scanned with CamScanner